e-ISSN No. 3107/6564

भाग 01 अंक 01 / जून 2025

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

पौधों में रोग प्रबंधन

शुभम सिंह
j.jai7894@gmail.com
पीएचडी स्कॉलर- प्लांट पैथोलॉजी SHUATS, प्रयागराज, यू.पी

परिचय:

पौधों में रोग लगना एक सामान्य कृषि समस्या है, जो **उत्पादन में भारी नुकसान** का कारण बन सकता है। ये रोग बैक्टीरिया, वायरस, फफूंदी (फंगस), नेमाटोड और कीटों के माध्यम से फैलते हैं। **समय रहते सही पहचान और उपचार** ही फसल की सुरक्षा का सबसे अच्छा उपाय है।

पौधों में रोग के प्रमुख कारण:

फफूंद (Fungi):

जैसे – पत्तियों का झुलसना, तना सड़न, फल सड़न।

उदाहरण: धान की झुलसा बीमारी (Blast), गेहूं का करंड रोग।

बैक्टीरिया (Bacteria):

जैसे – पत्तियों पर पानी जैसे धब्बे, सड़न।

उदाहरण: पत्तागोभी का ब्लैक रोट।

वायरस (Virus):

जैसे – पत्तियों का मुड़ना, पीला पड़ना।

उदाहरण: टमाटर मोज़ेक वायरस, भिंडी यलो वीन वायरस।

नेमाटोड (सूक्ष्म कीड़े):

जड़ों में गांठें बन जाती हैं, जिससे पौधे का विकास रुक जाता है।

उदाहरण: आलू या टमाटर की जड़ों में गाँठ।

रोग प्रबंधन की प्रमुख विधियाँ:

1. निवारक उपाय (Preventive Measures):

उपाय	विवरण
स्वस्थ बीजों का प्रयोग	प्रमाणित और रोगमुक्त बीज बोएं
फसल चक्र अपनाना	एक ही फसल बार-बार न बोएं
साफ-सफाई	खेत की नियमित निराई-गुड़ाई करें
पौधों की दूरी	बहुत घनी बुवाई से नमी बढ़ती है, जिससे रोग बढ़ते हैं

2. **जैविक रोग नियंत्रण (Organic/Biological Control):**

जैविक तरीका	उपयोग
1. नीम तेल / अर्क	कीट और फफूंदी दोनों के लिए प्रभावी
2. ट्राइकोडर्मा (Trichoderma)	फफूंदी जनित रोगों पर नियंत्रण
3. दशपर्णी अर्क / छाछ	बैक्टीरियल व वायरस नियंत्रण में सहायक
4. पौधों की राख और गोमूत्र का छिड़काव	शुरुआती रोग नियंत्रण

3. **रासायनिक नियंत्रण (Chemical Control):**

रोग	नियंत्रण उपाय
❖ **फफूंदी**	मैनकोजेब, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव
❖ **कीटजनित वायरस**	इमिडाक्लोप्रिड जैसे कीटनाशकों का प्रयोग
❖ **बैक्टीरिया**	स्ट्रेप्टोसाइक्लिन + कॉपर सल्फेट का छिड़काव

*रासायनिक दवाओं का प्रयोग **सावधानीपूर्वक और सीमित मात्रा में** करें।*

समेकित रोग प्रबंधन (Integrated Disease Management – IDM):

यह पद्धति जैविक, यांत्रिक, रासायनिक और सांस्कृतिक सभी उपायों का संयोजन है।

तकनीक	उदाहरण
फसल चक्र	एक साल के अंतराल में फसल बदलना
मल्चिंग	नमी और बीमारियों से रक्षा
समय पर छिड़काव	रोग फैलने से पहले दवा देना

किसानों के लिए सुझाव:

- ✓ मिट्टी की नियमित जांच कराएं।
- ✓ रोग का लक्षण दिखाई देने पर पास के **कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)** या **कृषि अधिकारी** से सलाह लें।
- ✓ **जैविक विधियों को प्राथमिकता** दें, ताकि मिट्टी और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहें।